Anand
DATE
PAGE NO :

ऑडियो, विडियो, रिकॉर्डिंग एवं कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नं. 10 दिनांक
ZOOM0009 स्थान – बड़नावा चारनाण् लखे की ढाणी
ट्रैक समयावधि
कलाकार का नाम – नेकमोमद (गायन / वादन)
पिता का नाम – सिन्धे खां
सहायक कलाकार

1
2
3

ऑडियो रिकॉर्डिंग का समय
विषय – कथा (रामसिंह और अमर सिंह)
विशेष – विवरण –

विशेष-विवरण – एक कथा दो भाई – राम सिंह और अमर सिंह के जीवन पर आधारित है। पिता कि मृत्यु के बाद बड़े भाई राम सिंह को उसका उत्तराधिकारी घोषित कर दिया जाता है पहले दोनो भाई में बहुत प्रेम होता है अमर सिंह की पत्नी इतनी होशियार नहीं होती है जबकि राम सिंह की पत्नी बहुत समझदार होती है अमरसिंह जो कि शराब अमल (अफीम) का सेवन करता है।

राम सिंह राज पाठ सम्भालते है और अमर सिंह एक फैमिल पर काम करते है। एक दिन बारिश का मौसम होता है और राम सिंह कि एक (गलाश) (पानी पीने का लौटा) जिसके ऊपर मोती जड़े हुए होते है वह अमर सिंह के पास रह जाती है। बारिश के चलते अमरसिंह वह (गलाश) ~~फैमिल~~ फैमिल पर छोड़ आते है।

बारिश के चलते सभी मजदूर अपने-अपने घर चले जाते है। राम सिंह कि पत्नी राम सिंह से केहती है कि आपने जो गलाश अपने भाई को दी है वो ले आओ वो शराबी अमलदार कहीं उसे बेच कर खा न जाये? राम सिंह अपनी गलाश लेने के लिए अपने भाई अमरसिंह के घर जाता है और अपनी गलाश मांगता है और उसे भला-बुरा केहता है। और अमर सिंह को गुस्सा आ जाता है।

अमर सिंह रातों रात जाता है गलाश लेने तो आगे देखता की बहुत से मजदूर वहां काम कर रहे होते है ये देखकर अमर सिंह हैरान हो जाता है वह सोचता है कि मै अभी पुरे मजदूरों की छुट्टी करके गया था। ये लोग कौन है जो रात को काम कर रहे हैं और वह पुछता है कि आप कौन हो तो वो लोग केहते है कि हम राम सिंह का दिन है और उनका दिन अच्छा है और आपका अच्छा नहीं है।

तो अमरसिंह उनसे केहता है कि मेरा दिन कब आयेगा तो जवाब आता है कि आप ये शहर छोड़ देंगे तब आपका दिन आ जायेगा अमरसिंह वहां से वापस आता है और राम सिंह को उनकी गलाश देकर अपने घर आता है और अपनी पत्नी और एक उनकी बान्दी को लेकर वहां से निकल जाता है। रात होने पर वह तीनों एक शहर के पास जाते हैं उस समय उनके पास एक घोड़ा एक तलवार और तीरकमान उनके पास होते हैं।

उस शहर मे रात के समय एक शेर का आना जाना रहता है। तो रात आठ बजे से सारे प्रवेश द्वारों को बन्द किया जाता है। उस समय मे भी वहां पहुंचते है और वहां खड़े चौकीदार से केहते है कि हमें भी आज रातसरण दो तो चौकीदार केहता है की दरबार का हुकम है रात को आठ बजे के बाद दरवाजा नहीं खोलना। फिर वो तीनो पास मे ही कही रात गुजारने के लिए जाते और खाने-पीने का बन्दोबस्त करते है।

Anand
DATE :
PAGE NO. :

आधी रात गुजरने पर वह शेर शहर की तरफ आता है। और उसे इन्सान के जिस्म की खुशबू आती है। तो वह बहुत खुश होता है। जैसे ही वह नजदीक आता है और वार करता है उस समय अमर सिंह उसे खत्म कर देता है। और सबूत के तौर पर कान और पुछ काट कर अपने पास रख लेता है। सुबह होते ही वह वहा से रवाना हो जाता है।

तो कुछ लोग देखते है कि शेर की लाश पड़ी है और लोग जाकर दरबार को खबर देते है कोई कहता है मैने मारा - कोई कहता है मैने मार दरबार कहता है के आपके पास क्या सबूत है. शेर सबूत न मिलनेपर चौकीदार से पुछा जाता है तो वह कहता है कि एक आदमी और दो औरते यहां रात भर थी और वह आदमी खुद को अमरसिंह बता रहा था

और वो सुबह होते ही यहां से रवाना हो गये। दरबार अपने नौकरो को अमरसिंह का पीछा करने के लिए भेज देता है। वह लोग अमरसिंह को वापस दरबार के पास लाते है और दरबार उसे इनाम देता है और उससे कहता है की आप मेरे यहा नौकरी पे रह जाओ रोज का एक हीरा मिलेगा. अमरसिंह नौकरी पर रह जाते है और अपनी पत्नी और दासी को अलग कमरा दिया जाता है।

अमर सिंह की पत्नी जो की सिर्फ जने खाना जानती थी। दरबार द्वारा अमरसिंह को एक दिन का एक हीरा दिया जाता था। दासी उस हीरे को बेच कर चने लाती थी और वो दोनो खाती थी। जैसे-जैसे समय बीत रहा था. अमरसिंह राजा के यहा नौकरी करने लग गया था। उसी शहर में एक सेठ रहता था जो बाहर वर्ष से घर आया था। उसकी पत्नी बहुत खूबसूरत थी।

सेठ उससे नाराज हो गया, उसी समय दो चोर वहा आते है। तो देखते है कि सेठ और सेठानी के बीच नाराजगी है वह दोनो भी वहां पहुंच जाते है और सेठानी से केहते है की सेठानी जी आप मेरी बात मानो और हमारे साथ चलो वह सेठानी को अपने साथ ले जाते है और अमर सिंह के घर मे छोड़ देते है और उनकी पत्नी को उठा कर सेठ जी के घर पर छोड़ आते है।

जब वह सेठानी वहां पहुंचती है तो उस कमरे की अच्छी साफ सफाई करती है और उस दासी का भी हुलिया बदलती है और शाम के समय वह उसे अमरसिंह के पास खर्चे के कुछ पैसे लेने को भेजती है अमरसिंह हमेशा की तरह एक हीरा उस दिन भी देता है। हीरा लेकर वह दासी सेठानी के पास आती है और जब सेठानी हीरा देखती है तो वह सोच मे पड़ जाती है।

और दासी से पुछती है की ये हीरा कब से ला रही है तो दासी केहती है की 2-3 साल हो गये, तो सेठानी केहती है तुम किसे ये हीरा बेच कर आती हो तो दासी केहती है। की वो जो सामने सेठ है उसे दे कर आती हु और चने ले कर आती हूँ। तो सेठानी केहती है की आज तुम फिर से हीरा लेकर जाओ वो दासी हीरा लेकर जाती है और वो सेठानी भी उसके साथ जाती है सेठ उसे हमेशा की तरह चने देता है तो सेठानी बोलती है हरामी तु सवा लाख का हीरा लेकर ये चने देता है

मै दरबार से कहकर तुम्हे मरवा दूंगा मेरा पति यहा नौकरी करता है। आज तक जितने भी हीरे लिये है समय रहते वापस करदे हीरे लाकर वह अमरसिंह के लिए एक खुबसूरत महल बनाती है। और फिर एक दिन वह अपने पति अमरसिंह और दरबार को अपने महल खाने पे बुलाती है तो वो दोनो वहा जाते है अमरसिंह यह रचना देखकर दंग रह जाता है।

Anand
DATE :
PAGE NO. :

और सोचता है चने खाने वाली तो ऐसा नहीं कर सकती जब वह उसके पास जाता है और दोनों की मुलाकात होती है तो वह स्त्री (सेठानी) कहती में ने तेरा दिन है और अब तुम्हारा दिन घर आ गया है। कहानी के अन्त में वह नये नगर अमर नगर का निर्माण करता है। और राम सिंह भी आकर अपनी जायदाद का 50% अमर सिंह को देता है और एक-एक घड़ी लाख-लाख रुपये की गुजारता है